



INTERNATIONAL Literary Quest

INTERNATIONAL Literary Quest
E-mail : internationalliteraryquest@gmail.com
website : www.internationalliteraryquest.in

Published By : YUGANTAR PRAKASHAN
D-750, Gali No. 4, Ashok Nagar, Shahadara, Delhi-93

INTERNATIONAL Literary Quest

Vol -9, ISSUE -5, January-June 2019

ISSN:2319-7137

INTERNATIONAL Literary Quest

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal



Prof. Ashok Singh
(Editor in Chief)
Dr Vikash kumar (Editor)
Dr Surendra pandey (Editor)

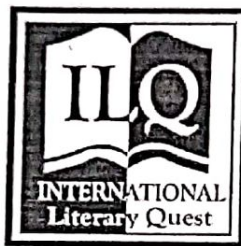
January-June 2019

ISSN : 2319-7137

Volume : 09/Issue : 05
Jan-June-2019

INTERNATIONAL LITERARY QUEST

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal



Chief Editor

Prof. Ashok Singh
Hindi Department
Banaras Hindu University

Editor

Dr. Vikash Kumar
Dr. Surendra Pandey

दलित चिन्तन की वैचारिकी और सर्जनात्मक साहित्य

डॉ. हिमांशु कुमार*

भारतीय सामाजिक संरचना में हजारों वर्षों तक बहुजन समाज शूद्र के रूप में जीवन जीने के लिए अभिशप्त रहा है। ये शूद्र दास थे, श्रमिक थे, अस्पृश्य थे किन्तु मनुष्य नहीं थे, इन्हें ब्राह्मण के आदेशों से चलना होता था। कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

“पुरुष मेघ यज्ञ में ब्राह्मण ब्रह्मत्व को, राजन्य राज्य को, वैश्य मरुत को और शूद्र तप (श्रम) को बलि चढ़ाया जाना चाहिए।”¹

“यदि कोई ब्राह्मण किसी क्षत्रिय या वैश्य को गाली दे तो उसे जुर्माना चुकाना पड़ेगा, किन्तु यदि वह शूद्रों को गाली दे तो उसे कोई सजा नहीं मिलेगी।”²

“चाण्डाल को छूना और देखना पाप है।”³

“शूद्र की हत्या करने के लिए वही प्रायश्चित्त निर्धारित है जो किसी राजहंस मयूर बत्तख, कौवे उल्लू, मेढक, छछून्दर, कुत्ते आदि की हत्या के लिए।”⁴

प्राचीन साहित्य में ऐसे हजारों उदाहरण भरे हैं जो दलितों के प्रति अभिजात्य समाज की हैवानियत के प्रमाण।

संस्कृत में लिखे गये धर्म ग्रन्थों में रामायण काल में ‘शम्बूक वध’, महाभारत कालीन एकलव्य एवं, कर्ण की उपेक्षा के साथ दण्ड आदि (वर्ण और जाति के आधार पर) का प्रकरण दलित वर्ग के प्रतिनिधित्व करने वाले नायकों के साथ अन्याय, भारतीय हिंदू समाज की पोल खोलता है और यही से दलित जन मानस में आक्रोश की लहर पैदा होती है। दलित चिन्तन की शुरुआत लगभग यहीं से मानी जा सकती है।

वरतुतः दलित कहा जाने वाला ही कभी शूद्र, अनार्य, अस्पृश्य, अछूत और गांधी जी का ‘हरिजन’, कहा जाता रहा है। ‘दलित कौन है’— इस प्रश्न के लिए कुछ विद्वानों के विचार को देखना अप्रासंगिक न होगा। ओम प्रकाश वाल्मीकि लिखते हैं— ‘दलित शब्द का अर्थ है जिसका दलन और दमन किया गया है, जिसे दबाया गया है। उत्पीड़ित, शोषित सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, विनिष्ट, मर्दित, परत हिम्मत, हतोत्साहित, वंचित आदि।’⁵

दलित लेखक माताप्रसाद ‘दलित’ की परिभाषा इस प्रकार करते हैं— दबाया गया, गिराया गया, अलग किया गया, उत्पीड़ित उपेक्षित, बहिष्कृत, अपमानित शोषित आदि।..... मुख्यतः हिन्दू समाज में शस्त्र और शास्त्रसे पीड़ित अपमानित और शोषित समुदाय आते हैं, उनमें जहाँ अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, घुमंतु जातियाँ बंधुआ मजदूर, झोपड़ पट्टियों में रहकर नारकीय जीवन जीने वाले भी आते हैं।’⁶

* असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)